विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

रूपम कुमारी , वर्ग- हिन्दी , विषय-हिन्दी

. दिनांक- ५/७/२०.

||अध्ययन- -सामग्री ||.

आज के पावन दिवस गुरुपूर्णिमा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

आज गुरुपूर्णिमा है तो घर में अपने अभिभावक के समीप बैठें और इस दिवस के महत्व की जानकारी लें । यह बहुत ही उपयोगी और आपके संस्कार की वृद्धि करने वाला होगा ।

पठन-पाठन :

स्नेह कहानी का शेषांश.....

उमा चौंककर बोली ,"शशि है"?

लेकिन शशि रुका नहीं । अमूल्य ने उमा कहा ," जिससे तुम स्नेह करती हो ,जिसे तुम सुखी देखना चाहता हो ,उसके लिए तुम्हें यह मकान ही छोड़ती होगा ।".

उमा बोली , "त्याग ! इसमें क्या है ?पर सोचती हूँ क्या हम कायर नहीं है ?" "परंतु शशि के दुख का प्रधानमंत्री कारण तुम हो उमा ! तुम बात में से हट जाओगी तो भी भी इतनी -कठोर न होगी ?"

उमा ने सोचा कि अमूल्य ठीक कहते हैं ।दूसरे के अधिकार की वस्तु को अपना बनाकर कौन सुखी रहा है ।शशि जीजी से अलग नहीं हो सकता है । जाने क्यों उस अभागे बालक पर मेरी इतनी ममता है । न जाने क्यों ?

उमा की गोदी में जब तक एक साल का बालक था ।शशि के स्कूल के रास्ते में उमा का मकान पड़ता था । उस मकान की खिड़की के पास शशि रोज चाची को नमस्ते और छोटे अशोक से हँसकर बोलती ।

उमा सोचती,शशि अब प्रसन्न है । वह ठीक वक्त पर खिड़की पर आकर खड़ी हो जाती । -कभी वह अंदर भी आता ।उमा पूछती ,"क्यों शशि कैसे हो ?" शशि कहता , " अच्छा हूँ चाची ! अब ताई मारती नहीं है ।"

उसकी आँखें भर आती ,वह मन-ही -मन कहती ,शशि सुखी रहे ,यही मुझे प्रिय है । लेकिन ,वह सोचती निरुपमा ऐसी क्यों है ? पर इसका उत्तर उसने -कभी नहीं पाया ....

शेष अगली कक्षा में .....

पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ें व समझें तथा अपनी कॉपी में लिखें ।.

धन्यवाद